6

मेरे गोद लेनेवाले पिता रायसाहब सुरजूलालजी का देहावसान

अपनी ननिहान के नाना और मामा का संक्षिप्त परिचय देने के बाद अब मैं पुनः अपने पैतृक परिवार की ओर लौटता हूँ। मैं अपने गोद लेनेवाले पिता रायसाहब सुरजूलालजी का थोड़ा बहुत वर्णन पहले कर चुका हूँ। 1932 में अर्थात् मेरी 8 वर्ष की अवस्था में ही वे स्वर्ग सिधार गये थे इसलिए उनकी बहुत ही धुँधली याद मेरे मन में रही है। हम लोगों के परिवार में एक घोड़ागाड़ी, एक फिटन और एक फोर्ड कंपनी की मोटर थी जिसका नंबर 9 था। गया नगर में कलक्टर, एस पी, आदि के बाद व्यापारीवर्ग में केवल हमारे परिवार में ही उस समय तक मोटर का आगमन हुआ था। मुझे याद है, प्रति मंगलवार मुझे फिटन में लेकर रायसाहब बागेश्वरी देवी के दर्शनों को जाया करते थे। पुजारी माला मेरे गले में डाल देता और प्रसाद का पेड़ा मेरे हाथ में पकड़ा देता जो मुझे अत्यंत स्वादिष्ट लगता। यों तो मिठाइयों की घर में कोई कमी नहीं रहती थी और न आज की तरह उन्हें खाने में कोई रुकावट ही थी, फिर भी प्रसाद की मिठाई में जो स्वाद आता था वह निराला ही था। रायसाहब बहुत गंभीर प्रकृति के थे और मुझे उनके सामने उछलकूद तो क्या, जाने में भी डर लगता था। मुझे याद है कि मेरे अधिक शैतानी और धमाचौकड़ी करने से जब पिताजी परेशान हो जाते तो वे नौकरों से कहते 'रायसाहब को खबर करो कि गुलाब मान नहीं रहा है, इसे बुला लें।' यह सुनते ही मेरी सिट्टी-पिट्टी गुम हो जाती और मैं शांत हो जाता। रायसाहब जब बदरीनाथ की यात्रा को सारे परिवार के साथ जा रहे थे तो मैंने साथ जाने की बड़ी जिद की थी और बड़ी कठिनाई से मुझे फुसलाया गया था। वे बदरीनाथ से वापस नहीं लौटे और वहीं दो-तीन दिन पूजा आदि करने के बाद लौटने के दिन सुबह उनका शरीर शांत हो गया। परिवार के अन्य बीसों व्यक्तियों के अतिरिक्त उनके साथ उनके निजी पंडित और नौकर भी बदरीनाथ गये थे। सुबह उन्होंने उठने के बाद पंडितजी, को पुकार कर कहा कि जरा मेरी नाड़ी देखें। पंडितजी, जो छोटे-मोटे वैद्य भी थे, कलाई

पर हाथ रखकर नाड़ी का अनुभव नहीं कर सके तो बोले, 'थोड़ी देर बाद ही कुछ बता सकता हूँ कि नाड़ी की स्थिति क्या है।' रायसाहब समझ गये और बोले, 'मैं जान गया। कोई चिंता नहीं। आप भूमि पर कंबल बिछा कर मेरे सोने की व्यवस्था करें और गीता के दूसरे अध्याय का पाठ शुरू कर दें।' मेरी गोद लेनेवाली माँ जो अन्य स्त्रियों के साथ भोर में बाहर नित्य-क्रिया को जानेवाली थी, यह दृश्य देखकर हक्की-बक्की रह गयी और रोने लगी। रायसाहब नें कहा, 'गुलाब की माँ से कहो, उदास होकर मेरे मन को दुःखी न करें। भगवान का मंदिर सामने है, यहाँ की सारी पूजा समाप्त हो चुकी है। अब इससे अधिक सुंदर अवसर और स्थान अंतसमय के लिए मुझे कहाँ मिलेगा ! मुझे कोई दुःख नहीं है, उसके रोने से ही मुझे दुःख होगा।' रायसाहब की इस अचानक अस्वस्थता का समाचार बिजली की तरह फैल गया। बदरीनाथ मंदिर के कपाट खुल चुके थे। पुजारी भगवान का प्रसाद और चंदन लेकर भागे हुए आये। रायसाहब के माथे पर चंदन लगा दिया गया और प्रसाद ग्रहण करके हँसते-बोलते हुए उन्होंने शरीर छोड़ दिया। मैं तो गया में था ही। मुझे याद है बदरीनाथ से तार आते ही सारे शहर में उदासी छा गयी थी और बाजार बंद हो गये थे। रायसाहब 20-22 वर्ष तक नगरपालिका के सदस्य, गया पोस्ट आफिस तथा इंपीरियल बैंक के खजांची, गया की उस समय की एक मात्र कन्या हाई स्कूल के जन्मदाता सदस्य, गया नगर में बिजली सप्लाई करनेवाली गया एलेक्ट्रिक सप्लाई कंपनी के संस्थापक तथा संचालक तथा रामविनोद संस्कृत विद्यालय के संस्थापक थे। नगर के प्रत्येक सार्वजनिक कार्य में उनकी भूमिका रहती थी। जिस प्रकार जीवन में उन्होंने यश कमाया था उसी प्रकार उनकी मृत्यु भी गौरवमयी थी। ऐसे लोगों के विषय में ही गीता में कहा गया है।

क्षीणे पुण्ये मर्त्यलोकं विशंति।

निश्चय ही उनके रूप में स्वर्ग से उतरकर कोई महान आत्मा ही भूमि पर आयी थी।